# कांकरेज

## भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

# प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

**॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥**


मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com


**अनुवाद संबंधी सूचना**

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

# कांकरेज गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

## परिचय, मूल प्रजनन क्षेत्र और शुद्ध प्रकार

मूल लेखक कांकरेज को उस प्रकार का शुद्ध रूप बताता है जिसे उस समय सामान्य रूप से "गुजरात नस्ल" कहा जाता था। यह भारत के बड़े आकार वाले गोवंशों में गिनी जाती है। इसकी कार्य-क्षमता काफी अधिक है; पशु सक्रिय और शक्तिशाली हैं तथा सड़क पर गाड़ी खींचने, हल चलाने और मोट से पानी खींचने—तीनों प्रकार के कार्यों के लिए समान रूप से उपयुक्त बताए गए हैं।

कांकरेज गुजरात के सभी भागों में मिलता है, पर इसका मुख्य प्रजनन उत्तर गुजरात में, तत्कालीन पालणपुर एजेंसी के अधीन राज्यों में होता था। राधनपुर, वडियाल, संतापुर, वरही, भाभदार, देवदार, डीसा और पालणपुर वे केंद्र बताए गए हैं जिनके आसपास यह नस्ल बड़ी संख्या में पाली जाती थी। अहमदाबाद जिले में बॉम्बे, बड़ौदा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे पर छारोड़ी रेलवे स्टेशन के निकट नॉर्थकोट फार्म में सरकार भी इसका एक झुंड रखती थी।

अहमदाबाद और खेड़ा के ब्रिटिश जिलों में भी कुछ सीमा तक शुद्ध प्रकार का प्रजनन होता था, लेकिन प्रांत के दक्षिण की ओर जाते हुए प्रकार में परिवर्तन दिखाई देता था। लेखक इसका कारण यह बताता है कि दक्षिण के प्रजनक झुंडों की शुद्धता बनाए रखने में उतने सावधान नहीं थे और दूसरी नस्लों के रक्त का मिश्रण होने दिया गया। इन मिश्रित रूपों को शुद्ध कांकरेज से अलग बताने के लिए "गुजराती नस्ल" कहा जाता था, किंतु लेखक उन्हें स्वतंत्र नस्ल नहीं मानता; उसके अनुसार वे कांकरेज का परिवर्तित रूप मात्र हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 2 | पीडीएफ पृ. 8.

## आकार और सामान्य माप

लेखक कांकरेज को भारत में मिलने वाली उत्कृष्ट बड़ी नस्लों में रखता है और लिखता है कि भारी गठन तथा उससे जुड़े अनेक अच्छे गुणों के कारण बहुत से लोग इसे इस दृष्टि से सर्वोत्तम मानते हैं।

| पशु | कुकुद के पीछे ऊँचाई | छाती का घेरा |
|---|---|---|
| अच्छा बैल (बैल) | 54–61 इंच | 69–81 इंच |
| अच्छा सांड | 55–57 इंच | 73–81 इंच |
| अच्छी गाय | 48–55 इंच | 64–67 इंच |

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 2 | पीडीएफ पृ. 8.

## रंग

प्रमुख रंग सफेद या चाँदी जैसा धूसर है। आगे के पैरों का सामने वाला भाग, घुटने, फेटलॉक और पेस्टर्न सामान्यतः काले होते हैं और पूँछ के अंत का बालों का गुच्छा भी काला होता है। लौह-धूसर रंग भी असामान्य नहीं है; शुद्ध पशुओं में कभी-कभी लाल, फॉन अथवा काले रंग भी मिलते हैं।

सांड गायों और बैलों की तुलना में अधिक गहरे रंग के होते हैं। वे प्रायः लौह-धूसर होते हैं और पैरों के सिरों की ओर रंग लगभग काला हो सकता है; कभी-कभी, यद्यपि बहुत कम, लगभग पूरा सांड काला भी मिलता है। सांडों में एक सामान्य रंग काला-धूसर है जिसमें छाती के किनारे, अग्र-छाती, लिंगावरण, पैरों का पिछला भाग और कान सफेद या चाँदी-धूसर रहते हैं। बैल सामान्यतः गाय और सांड दोनों की तुलना में हल्के होते हैं।

शुद्ध नस्ल में चितकबरे या टूटे हुए रंग नहीं मिलते। फिर भी शुद्ध पशुओं में सींगों के आधार और माथे की ऊपरी अस्थि-रेखा के आसपास लाल-भूरे बाल असामान्य नहीं हैं। यह लालिमा युवा पशुओं में अधिक दिखाई देती है और आयु बढ़ने पर प्रायः समाप्त हो जाती है, हालांकि कुछ पशुओं में बनी रहती है। मानसून में रंग हल्का पड़ने की प्रवृत्ति रहती है। जो वृद्ध सांड पहले गहरे लौह-धूसर या लगभग काले रहे हों, वे अधिक आयु में चाँदी जैसे धूसर हो सकते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 2-3 | पीडीएफ पृ. 8-9.

# कांकरेज सांड (Kankrej Bull)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate I)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिया गया।

## सिर, सींग, आँखें और कान

कांकरेज का समग्र रूप बहुत सममित, एकरूप और उच्च श्रेणी का बताया गया है। सबसे अधिक स्थिर और स्पष्ट लक्षण सिर में दिखाई देते हैं। सींग आधार पर मोटे और पूरी तरह गोल होते हैं तथा माथे की ऊपरी चपटी अस्थि-रेखा से निकलते हैं। यह रेखा एक सींग से दूसरे सींग तक लगभग सीधी जाती है और दोनों ओर माथे से आगे निकली हुई होने के कारण सींगों के आधार के पहले 2–3 इंच भाग पर त्वचा चढ़ी हुई-सी दिखाई देती है। वृद्ध पशुओं में यह त्वचा पीछे हटने लगती है।

सींग बहुत सममित होते हैं। वे पहले बाहर की ओर, फिर थोड़ा पीछे, उसके बाद सीधे ऊपर और भीतर की ओर मुड़ते हैं और सिरों पर फिर पीछे की ओर झुकते हैं। माथा चौड़ा और सपाट है, दोनों आँखों के ऊपर हल्का गोल उभार है। आँखें बड़ी, काली, निर्भीक किंतु शांत भाव वाली हैं। पलकों का खुलाव अंडाकार है; विशेषकर वयस्क सांड में आँख के ऊपर के उभार पर ऊपरी पलक के ऊपर 2 या 3 समानांतर झुर्रियाँ सामान्यतः दिखाई देती हैं। सांड में आँख के ठीक ऊपर से शुरू होकर उसके सामने से नीचे की ओर जाती छोटी सफेद लकीर का भी उल्लेख है। कान बड़े होते हैं; वे सफेद या काले हो सकते हैं, किनारे पर सफेद पट्टी रहती है और भीतर जहाँ बाल नहीं होते वहाँ गहरा नारंगी रंग दिखाई देता है। कभी-कभी सिरे के पास काला धब्बा भी होता है। स्थिर अवस्था में कान सीधे नीचे लटकते हैं और उनका खुला भाग आगे तथा भीतर की ओर रहता है। चेहरा छोटा, संकरा और बारीक तराशा हुआ है। मुखाग्र छोटा और काला है तथा मुखाग्र और नथुने साफ तथा स्पष्ट सीमाओं वाले हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 3 | पीडीएफ पृ. 9.

## गर्दन, कुकुद, गलकम्बल और शरीर

सांड की गर्दन छोटी और बहुत मोटी, जबकि गाय की गर्दन महीन होती है। सांड का कुकुद बड़ा और अच्छी तरह विकसित है तथा एक विशिष्ट ढंग से सीधे पीछे की ओर पीठ की मध्य रेखा पर झुकता है, मानो उसका सिरा छोटा और अचानक भीतर की ओर मुड़ा हो। गाय में कुकुद मध्यम या छोटा होता है।

गलकम्बल सांड और गाय दोनों में बड़ा और लटकता हुआ है, विशेषकर सांड में; यह ठोड़ी से अग्र-छाती तक जाती त्वचा की एक सरल तह के रूप में बताया गया है। त्वचा सामान्यतः पतली, लचीली और नारंगी-पीले रंग की है। छाती विशाल है, पसलियाँ अच्छी तरह मुड़ी हुई हैं और शरीर लंबा है। कई पशुओं में पीठ कूल्हों की ओर हल्की ऊपर उठती है और पिछला भाग ढलान लिए रहता है।

पूँछ पतली है, अंत में लगभग एक फुट लंबे काले बालों का गुच्छा है और वह हॉक से थोड़ा नीचे तक पहुँचती है। कोहनियाँ साफ और खुली हैं। अग्रबाहु और जाँघें मांसल हैं। लिंगावरण पतला है। पैर सीधे और साफ हैं, घुटने और हॉक के नीचे हड्डियाँ तथा नसें स्पष्ट हैं। खुर कठोर, काले और सुडौल हैं तथा चाल समतल और सहज है। गाय का थन सामान्यतः छोटा, किंतु अच्छी आकृति वाला है और स्तनाग्र पर्याप्त दूरी पर स्थित हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 3 | पीडीएफ पृ. 9, 11.

## सींग मोटे करने की स्थानीय पद्धति

रबारी और स्थानीय प्रजनक विशेष रूप से सांडों में सींगों की मोटाई को बहुत महत्व देते थे। सींग मोटे करने के उद्देश्य से जब बछड़ा लगभग 1 वर्ष का होता और सींग निकलने शुरू होते, तब सींग के मूल पर सींग के केंद्रीय भाग (सींग का भीतरी अस्थि-भाग) के ऊपर से सींग को कुरेदने या खुरचने की पद्धति अपनाई जाती थी। पशु 2 या 2½ वर्ष का होने पर यह प्रक्रिया फिर दोहराई जाती थी। लेखक कुछ पशुओं में दिखाई देने वाली असामान्य सींग-वृद्धि को इसी पद्धति का परिणाम बताता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 3 | पीडीएफ पृ. 11.

## मिश्रित 'गुजराती' रूपों की पहचान

कांकरेज के वे परिवर्तित रूप जिन्हें सामान्यतः 'गुजराती' कहा जाता था, दूसरे रक्त के मिश्रण की मात्रा के अनुसार शुद्ध वर्णन से कम या अधिक भिन्न दिखाई देते थे। बहुत से पशुओं में अंतर हल्का होता था, जबकि कुछ में स्पष्ट। सामान्य शरीर-रूप कांकरेज जैसा ही रहता, किंतु लेखक के अनुसार बारीक तराशा चेहरा, पतली त्वचा, साफ सीधे पैर, स्पष्ट मांसपेशियाँ और नसें तथा स्फूर्ति जैसे गुणवत्ता के संकेत कम हो जाते थे। कुछ पशुओं में शरीर की सममिति भी कम होती थी।

लेखक बाहरी लक्षणों से कुछ मिश्रण इस प्रकार पहचानता है: गोल माथा और पीछे झुकते सींग—गिर या काठियावाड़ी रक्त का संकेत; लंबा संकरा चेहरा और छोटे सींग—सिंध मिश्रण का संकेत; तथा चपटा माथा, गठीला शरीर और छोटे, आगे झुकते सींग—मालवी मिश्रण का संकेत।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 3 | पीडीएफ पृ. 11.

# कांकरेज गाय (Kankrej Cow)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate II)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप / Dimensions (इंच / inches)

| ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई<br>Height—Top of hump | ककुट के पीछे ऊँचाई<br>Height—Behind hump | शरीर की लंबाई<br>Length of body | शरीर का घेरा<br>Girth | अगले पैर का घेरा<br>Shank girth |
|---|---|---|---|---|
| 51½ इंच / inches | 49½ इंच / inches | 48½ इंच / inches | 64 इंच / inches | 6 इंच / inches |
| निचले पैर की लंबाई<br>Length of shank | सींग की लंबाई<br>Length of horn | चेहरे की लंबाई<br>Length of face | माथे की चौड़ाई<br>Breadth of forehead | कान की लंबाई<br>Length of ear |
| 6½ इंच / inches | 16 इंच / inches | 19 इंच / inches | 7 इंच / inches | 12 इंच / inches |

नोट: यह छायाचित्र तथा माप लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

## प्रजनक समुदाय और 1899 के अकाल का प्रभाव

इस नस्ल का प्रजनन मुख्यतः पेशेवर प्रजनकों—विशेषकर रबारी और भरवाड़—द्वारा किया जाता था। ये लोग कभी-कभी खेती भी करते थे, किंतु पशु-प्रजनन उनकी मुख्य आजीविका थी। कृषक भी कुछ मात्रा में पशु पैदा करते थे, पर सामान्यतः वे स्वयं प्रजनन करने की अपेक्षा प्रजनकों से युवा पशु खरीदकर उन्हें पालना पसंद करते थे।

व्यक्तिगत प्रजनकों के झुंडों का आकार बहुत अलग-अलग था। 1899 के अकाल से पहले 100 या 200 गायों और कई सांडों वाले बड़े झुंड असामान्य नहीं थे। लेखक के समय तक 50 पशुओं का झुंड भी सामान्य नहीं रह गया था और शुद्ध नस्ल के सांड बहुत दुर्लभ हो गए थे। एक सामान्य प्रजनक के पास 10–15 गायें और कुछ युवा पशु होते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 3 | पीडीएफ पृ. 11.

## चराई की परिस्थितियाँ और झुंड प्रबंधन

लेखक पूरे गुजरात को कम या अधिक पशु-प्रजनन के अनुकूल बताता है, लेकिन कुछ भाग अधिक उपयुक्त थे। अहमदाबाद और खेड़ा जिलों के अधिकांश भागों में उस समय की आवश्यकता के लिए पर्याप्त चराई थी; पूरी तरह कृषि वाले क्षेत्रों में भी खेतों और मेड़ों के किनारों पर कुछ चराई मिल जाती थी। इसके विपरीत दक्षिण में भरूच और सूरत जिलों में जलवायु और चराई दोनों की दशाएँ कम अनुकूल थीं और वहाँ प्रजनकों से अपेक्षाकृत निम्न दर्जे के पशु निकलते थे।

कांकरेज प्रजनक लगभग पूरी तरह चराई पर निर्भर रहते थे। केवल गर्म मौसम में, जब चराई कम और निम्न गुणवत्ता की हो जाती, तब ज्वार या बाजरे की कड़बी अथवा अन्य चारे की थोड़ी मात्रा दी जाती थी। रबारी और भरवाड़ अच्छे पशुपालक बताए गए हैं और चराई बदलने या गाँव के आसपास चारा कम होने पर वे झुंडों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाते थे। वे बिना अतिरिक्त खर्च के पशुओं के आहार में विविधता या सुधार का हर अवसर लेते थे।

फसल कट जाने के बाद वे पशुओं को खेतों में चराते थे; लेखक यह भी लिखता है कि वे हमेशा इस बात को लेकर बहुत सावधान नहीं रहते थे कि कटाई पूरी हो चुकी है और कभी-कभी ऐसी फसल में भी पशु घुस जाते थे जिसे अभी खेत से हटाया नहीं गया होता था।

प्रजनन पशुओं को कभी बाँधा नहीं जाता था। सुबह जल्दी चराई के लिए निकाला जाता, दिन की गर्मी में वे झुंड बनाकर छाया में लेटते और शाम को फिर चरते। रात में उन्हें बबूल के काँटों की बाड़ से घिरे खुले बाड़ों में लाया जाता था। आश्रय नहीं दिया जाता था। बाड़ों के लिए ऊँचे, सूखे और मालिक के घर के पास के स्थान चुने जाते थे।

कुछ क्षेत्रों में मानसून के महीनों में असंख्य मक्खियों के कारण पशुओं को रात में चराया जाता था, क्योंकि दिन में मक्खियाँ उन्हें चरने नहीं देती थीं। दिन में उन्हें बाड़े या पेड़ के नीचे रखा जाता और हवा की दिशा में गोबर व घास की आग का धुआँ करके मक्खियाँ दूर रखने की कोशिश की जाती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 4 | पीडीएफ पृ. 12.

## प्रजनन व्यवस्था और मौखिक वंशावली

सभी पशु एक बड़े मिश्रित झुंड में रहते थे और उसमें 1, कभी-कभी 2 सांड छोड़े जाते थे। हर बार योजनाबद्ध जोड़ी बनाकर प्रजनन नहीं कराया जाता था, फिर भी लेखक के अनुसार रबारी पशु-प्रजनन के मुख्य सिद्धांत समझते थे।

प्रजनन-सांड सामान्यतः चुना हुआ पशु होता था और अच्छे प्रजनकों में उसका चयन अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। श्रेष्ठ नर बछड़ों को इस काम के लिए चुना और बहुत सावधानी से पाला जाता था। ऐसे बछड़े किसी ज्ञात अच्छे सांड और चुनी हुई गाय से प्राप्त होते थे।

राधनपुर के कुछ प्रजनक अपने सांडों की नर-पक्षीय वंशावली कई पीढ़ियों तक जानते थे; यह जानकारी लिखी नहीं जाती, स्मृति में रखी जाती थी। प्रमुख रबारी अच्छे सांडों को नाम से पहचानते थे और जब नए प्रजनन-सांड की आवश्यकता होती तो उन्हीं प्रसिद्ध सांडों की संतानों को प्राप्त करने का प्रयास करते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 4-5 | पीडीएफ पृ. 12, 14.

## प्रजनन-सांड की परवरिश, उपयोग और आयु

प्रजनन के लिए चुने गए नर बछड़े को बहुत देखभाल से पाला जाता और हर मौसम में पर्याप्त भोजन मिलता था। ऐसे सांड 3 से 3½ वर्ष की आयु में सेवा के योग्य माने जाते और लगभग 6 या 7 वर्ष तक प्रजनन में उपयोग होते थे। इसके बाद उन्हें झुंड से निकालकर बेच दिया जाता और युवा सांड लगाए जाते।

इस व्यवस्था से रबारी उस जोखिम से बचते थे कि सांड अपनी ही बेटियों से प्रजनन करे; लेखक लिखता है कि वे धार्मिक और अन्य दोनों कारणों से इस प्रथा के विरोधी थे। रबारी बहुत कम युवा पूर्ण नर पशु रखते; सामान्यतः उन्हें बधिया कर वर्ष भर की आयु के आसपास बेच दिया जाता था।

उत्तर गुजरात के प्रजनक भले 6 या 7 वर्ष में सांड बेच देते हों, पर वे इसके बाद भी कई वर्षों तक प्रजनन योग्य रहते थे। लेखक के अनुसार सांड 16 वर्ष की आयु में भी उचित संतान दे सकता था और 18 या 19 वर्ष, यहाँ तक कि इससे अधिक आयु तक गायों की सेवा कर सकता था। बहुत अधिक आयु में वे गायों को कम गर्भित करते थे और गर्भ ठहरने पर बछड़े कमजोर तथा छोटे हो सकते थे। सांड हमेशा गायों के साथ खुला रहता था और कभी बाँधा नहीं जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 5 | पीडीएफ पृ. 14.

## दूध उत्पादन और दुहाई की पद्धति

लेखक सामान्य रूप से कांकरेज गायों को कम दूध देने वाली मानता है और नस्ल को समग्र रूप से डेयरी के लिए विशेष उपयुक्त नहीं बताता। फिर भी अच्छी तरह खिलाई गई चुनी हुई गायें प्रतिदिन 15–22 पाउंड (लगभग 6.8–10.0 किलोग्राम) दूध दे सकती थीं। औसत गाय का उत्पादन 4–10 पाउंड (लगभग 1.8–4.5 किलोग्राम) प्रतिदिन बताया गया है।

गायें दिन में दो बार दुही जाती थीं। पहले बछड़े को चूसने दिया जाता ताकि दूध उतर आए, फिर उसे हटाकर दुहाई की जाती। गाय को पूरी तरह नहीं दुहा जाता था; दुहाई के बाद बछड़े को फिर चूसने दिया जाता। गाय सामान्यतः शांत खड़ी रहती, लेकिन सावधानी के लिए पिछले पैर हॉक के ऊपर रस्सी से बाँध देना असामान्य नहीं था। यदि बछड़ा मर जाए तो गाय का दूध सूख जाने का उल्लेख है।

गाय सामान्यतः 6–8 महीने तक दूध देती थी, कभी-कभी थोड़ी अधिक अवधि तक। सामान्यतः 2 वर्ष में एक बार बछड़ा देती थी, जबकि कुछ गायें 18 महीने में भी बछड़ा देती थीं। जीवित बछड़ा चूसता रहे या गाय दुही जाती रहे तो बछड़ा होने के बाद 9 महीने से 1 वर्ष तक गाय ऋतु में वापस न आए; बछड़ा मर जाने पर वह जल्दी ऋतु में आ सकती थी।

गाय वर्ष के किसी भी समय ऋतु में आ सकती थी, किंतु मानसून सबसे सामान्य समय बताया गया है; इसलिए बछड़े प्रायः ठंड के मौसम के अंत या गर्मी की शुरुआत में पैदा होते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 5 | पीडीएफ पृ. 14.

## ब्याने की प्रक्रिया और बछड़े की शुरुआती देखभाल

गायें सामान्यतः चराई पर ही ब्याती थीं और अधिकांश मामलों में सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। कभी-कभी झुंड के साथ रहने वाला रबारी प्रसव में सहायता करता था; लेखक लिखता है कि अधिकांश रबारी इस काम की कुछ जानकारी रखते थे और दुर्घटनाएँ बहुत कम होती थीं।

नाभि पर कोई विशेष उपचार नहीं किया जाता था। बछड़े को गाय के सामने रखा जाता और उसे चाटकर साफ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता। इसके बाद रबारी बछड़े को बाड़े में ले जाता, गाय को बाजरे के आटे की पतली खीर/घोल जैसा पेय दिया जाता और बछड़े को दूध पीने के लिए लगाया जाता।

गाय 15 वर्ष से अधिक आयु तक, और कभी उससे भी आगे, प्रजनन करती रह सकती थी; पर बूढ़ी गायों के बछड़े छोटे होते थे। सांड झुंड के साथ ही रहते और चराई के दौरान ऋतु में आई गायों को गर्भित करते थे। जिन गाँवों में सांड नहीं होता, वहाँ ऋतु में आई गाय को सांड के पास लाकर गर्भित होने तक उसके साथ रखा जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 5-6 | पीडीएफ पृ. 14-15.

# कांकरेज गाय (Kankrej Cow)

स्रोत : K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate III)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप (इंच में)

| ककुड़ के शीर्ष तक ऊँचाई (Height to Top of Hump) | ककुड़ के पीछे ऊँचाई (Height Behind Hump) | शरीर की लंबाई (Length of Body) | शरीर का घेरा (Girth) | पिछले पैर की लंबाई (Shank Girth) |
|---|---|---|---|---|
| 51½ इंच | 49 इंच | 52 इंच | 64 इंच | 6½ इंच |

| सींग की लंबाई (Length of Horn) | चेहरे की लंबाई (Length of Face) | माथे की चौड़ाई (Width of Forehead) | कान की लंबाई (Length of Ear) |
|---|---|---|---|
| 17½ इंच | 16 इंच | 6½ इंच | 11 इंच |

नोट : यह छायाचित्र तथा माप सेकिटनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

## बछिया, खीस और बछड़े का पालन

बछिया पहली बार सामान्यतः 3½–4 वर्ष की आयु में ऋतु में आती और पहला बछड़ा 4–5 वर्ष की आयु में देती थी। पहली ऋतु लगभग हमेशा मानसून में आने का उल्लेख है।

खीस (प्रथम दूध (खीस)) के बारे में प्रथा एक जैसी नहीं थी। कभी बछड़े को खीस पीने दी जाती, पर कुछ रबारी इसे बछड़े के लिए हानिकारक मानकर जमीन पर दुह देते थे। कुछ इसे गाय को ही पिला देते थे। नगरों में इसे पारसी और मुसलमान खरीदते थे और उससे 'बाटरी' (बत्री) नाम का गाढ़े दूध की टिकिया जैसा खाद्य बनाते थे, जिसे स्वादिष्ट माना जाता था।

बछड़े को पहले सप्ताह पूरा दूध मिलता था। इसके बाद यदि बछिया हो तो मालिक दूध का कुछ भाग लेना शुरू कर देता, जबकि नर बछड़े को कुछ समय तक पूरा दूध मिलता रहता था। मालिक द्वारा लिए गए दूध की कमी पूरी करने के लिए कभी-कभी बछड़े को बाजरे के आटे और दही का थोड़ा घोल दिया जाता था।

लगभग 2–3 महीने की आयु में बछड़ा ठोस आहार चुनना शुरू करता और कुछ मामलों में थोड़ी सांद्र खुराक दी जाती थी। लगभग 3 महीने तक उसे बाड़े में रखा जाता था। 6–8 महीने में दूध छुड़ाया जाता था; स्रोत में नर बछड़ों का दूध बछियों से पहले छुड़ाने का उल्लेख है। कुछ मामलों में दूध छुड़ाने के बाद शरीर की दशा न गिरने देने के लिए थोड़ी सांद्र खुराक दी जाती थी। उसके बाद बछड़े झुंड के साथ चरते थे।

नर बछड़ों को 12 महीने की आयु से पहले बधिया किया जाता और सामान्यतः शीघ्र बेच दिया जाता था। बधियाकरण प्रायः ढेड़, भंगी या सावनी लोगों द्वारा किया जाता था और प्रत्येक बछड़े के लिए 3 पाई शुल्क लेने का उल्लेख है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 6 | पीडीएफ पृ. 15.

## कृषकों द्वारा युवा बैलों का पालन और काम में लगाना

सामान्यतः कृषक लगभग एक वर्ष के युवा बैल खरीदकर स्वयं पालना पसंद करता था। उत्तर गुजरात के रबारी प्रजनन क्षेत्रों से बड़ी संख्या में युवा बैल अत्यधिक कृषि वाले क्षेत्रों में लाते थे। कहा जाता था कि कृषक द्वारा खरीदे और पाले गए युवा पशु, यदि अधिक आयु में खरीदे जाएँ तो उसकी तुलना में, कहीं अच्छे कार्यशील बैल बनते थे, क्योंकि कृषक के यहाँ उन्हें रबारी की तुलना में बेहतर भोजन और अधिक देखभाल मिलती थी।

बैल 3–4 वर्ष की आयु में साधे जाते और हल्के काम में लगाए जाते थे। 5 वर्ष की आयु में परिपक्व होने तक उन्हें कठिन काम में नहीं लगाया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 6 | पीडीएफ पृ. 15.

## कार्य-क्षमता, सड़क और कृषि कार्य

कांकरेज की कार्य-क्षमता को लेखक काफी अधिक बताता है। पशु सक्रिय और शक्तिशाली हैं और सड़क तथा हल—दोनों कामों के लिए समान रूप से अनुकूल हैं। उनकी चाल खुली, सहज और विशिष्ट रूप से आरामदेह है तथा चाल में गरिमा दिखाई देती है।

गुजरात में सड़कें प्रायः आसपास की भूमि से नीचे होती थीं और उनमें कई इंच गहरी रेत रहती थी। इसलिए भारी गाड़ी खींचना कठिन काम था। अच्छी जोड़ी सामान्य देशी गाड़ी में 32 मन भार आसानी से खींच सकती थी; स्रोत इसी स्थान पर 1 मन = 40 पाउंड बताता है। इस मान के अनुसार 32 मन लगभग 580.6 किलोग्राम है। स्वयं गाड़ी का भार 16 मन (लगभग 290.3 किलोग्राम) बताया गया है। ऐसी जोड़ी एक दिन में 12–15 मील (लगभग 19.3–24.1 किमी) लगभग 2 मील प्रति घंटा (लगभग 3.2 किमी/घंटा) की औसत गति से चल सकती थी और दबाव देने पर इससे तेज भी।

तेज चाल (दुलकी चाल) वाले काम के लिए इन्हें शिग्राम में लगाया जाता था और लेखक उन्हें इस प्रयोजन के लिए उत्कृष्ट बताता है। रेतीली भूमि में खेत के काम के लिए उन्हें अनुपम कहा गया है। अच्छी तरह खिलाई गई जोड़ी मानसून में 2–3 एकड़ (लगभग 0.81–1.21 हेक्टेयर) प्रतिदिन जोत सकती थी, हालांकि वास्तविक क्षेत्र मिट्टी की गुणवत्ता और नमी पर निर्भर करता था। लेखक लिखता है कि इस ओर कृषि कार्य में उपयोग होने वाली किसी भी दूसरी नस्ल की तुलना में वे तेज चलते हैं और उन्हें बहुत कम हाँकने की आवश्यकता पड़ती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7 | पीडीएफ पृ. 17.

# कांकरेज बैल (Kankrej Bullock)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate IV)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप / Dimensions (इंच / inches)

| ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई<br>Height—Top of hump | ककुट के पीछे ऊँचाई<br>Height—Behind hump | शरीर की लंबाई<br>Length of body | शरीर का घेरा<br>Girth | अगले पैर का घेरा<br>Shank girth |
|---|---|---|---|---|
| 60 इंच / inches | 55½ इंच / inches | 55 इंच / inches | 71½ इंच / inches | 7¾ इंच / inches |
| **निचले पैर की लंबाई<br>Length of shank** | **सींग की लंबाई<br>Length of horn** | **चेहरे की लंबाई<br>Length of face** | **माथे की चौड़ाई<br>Breadth of forehead** | **कान की लंबाई<br>Length of ear** |
| 6½ इंच / inches | 18 इंच / inches | 22 इंच / inches | 9 इंच / inches | 14 इंच / inches |

नोट: यह छायाचित्र तथा माप सेफिटनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

## कार्यशील बैलों का आहार

आहार की विधि पशु की श्रेणी, स्थानीय फसल, बाजार भाव और मालिक की आर्थिक स्थिति के अनुसार बदलती थी। सामान्यतः कामकाजी बैलों को अच्छी खुराक दी जाती थी। लगभग सर्वत्र ज्वार की कड़बी, बाजरे की कड़बी या 'सुरमार' मुख्य चारा था। सांद्र आहार में ग्वार सबसे सामान्य था; कभी माठ, कपास-बीज या तेल-खली दी जाती थी और कभी घी या गुड़ भी मिलाया जाता था।

कभी कड़बी के स्थान पर ग्वार या अन्य दलहनों को मड़ाई के बाद मिलने वाले पत्ते और भूसी—जिसे 'गोटार' कहा गया है—दी जाती थी। खेती का व्यस्त मौसम, अर्थात मानसून, शुरू होने से पहले किसान पशुओं को अच्छी दशा में लाने के लिए पर्याप्त आहार देता, जिसमें ग्वार या कोई अन्य दलहन मुख्य घटक रहता। व्यस्त मौसम में यही अच्छा आहार जारी रहता; काम घटने पर खुराक कम कर दी जाती, अनाज बहुत कम या बिल्कुल नहीं दिया जाता और कड़बी मुख्य भोजन रह जाती। कभी पशुओं को चराई पर छोड़ दिया जाता और तब बहुत कम अतिरिक्त चारा मिलता।

एक सामान्य कामकाजी बैल की दैनिक खुराक का उदाहरण 4 पाउंड ग्वार (लगभग 1.81 किलोग्राम) और 25 पाउंड कड़बी (लगभग 11.34 किलोग्राम) है, जिसे दो बार में दिया जाता था। ग्वार खिलाने से पहले कूटा और भिगोया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7 | पीडीएफ पृ. 17.

## गाय और सांड का आहार

रबारी की गायों को सामान्यतः उतना ही मिलता था जितना वे चराई से प्राप्त कर सकें या, लेखक के शब्दों में, खेती वाले खेतों से 'चुरा' सकें। दूसरे मालिकों की गायों को भी सामान्यतः बहुत अधिक विशेष देखभाल नहीं मिलती थी; यदि उन्हें डेयरी के लिए रखा जाए तो अलग राशन दिया जा सकता था। ऐसे राशन में कड़बी और कपास-बीज, पिसा बाजरा या ज्वार, तेल-खली और थोड़ा नमक शामिल था।

सांड सामान्यतः मुख्य रूप से चराई पर अपना निर्वाह करते थे, किंतु उन्हें कभी-कभी ग्वार, ज्वार, बाजरा और कड़बी के साथ घी और गुड़ भी दिया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7-8 | पीडीएफ पृ. 17-18.

## बाजार और वितरण

गुजरात प्रांत में पशु-बाजार कम थे। प्रमुख बाजार अहमदाबाद में प्रत्येक शुक्रवार को लगता था। रबारी प्रजनन क्षेत्रों से युवा पशुओं के झुंड सीधे कृषकों को बेचने के लिए लाते थे; इस नस्ल के वितरण की यही सबसे सामान्य पद्धति बताई गई है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 8 | पीडीएफ पृ. 18.

## 1912 में दर्ज कीमतें

| पशु/श्रेणी | मूल रिपोर्ट में दर्ज कीमत |
|---|---|
| वास्तव में अच्छा कांकरेज सांड | ₹150–₹200 |
| प्रकार में पूरी तरह शुद्ध न होने वाला सांड | ₹125–₹150 |
| प्रथम श्रेणी कामकाजी बैलों की जोड़ी | लगभग ₹300 |
| काफी अच्छी जोड़ी | लगभग ₹250 |
| 3 वर्ष का, अभी न साधा गया बैल | ₹75–₹80 प्रति पशु |
| 2 वर्ष का बैल | ₹40–₹50 प्रति पशु |
| 1 वर्ष का बैल | ₹25–₹40 प्रति पशु |
| गाय | ₹40–₹80 |
| 1 वर्ष की बछिया | ₹15–₹35 |

लेखक यह भी लिखता है कि हाल के वर्षों में पशुओं के भाव कुछ बढ़े थे और वास्तव में अच्छे कांकरेज सांड प्राप्त करना अत्यंत कठिन था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 8 | पीडीएफ पृ. 18.

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com